प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 55 - A * OCT 2012 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	OCT 01.mp3	29	⊕			भगवान **राम का निनि० सच्चि० स्वरूप निरूपण** :: 'रामं विद्धि परम् ब्रह्मं सच्चिदानन्द अद्वयं' :: आत्मा-परमात्मा एकत्व विवेचना :: सीताजी द्वारा अपना **मूलप्रकृति स्वरूप निरूपण** :: संक्षेप में रामायण की कथा, सभी शरीरों की उत्पत्ति सीताजी करती हैं	
2	OCT 02.mp3	37	⊕	⊕		सामवेद : छा०उ० : **नारद-सनतकुमार सम्वाद**, नारद द्वारा अपने विद्याध्ययन का वर्णन, सनतकुमार द्वारा **भूमाततत्व निरूपण**, भूमा तत्त्व सुख स्वरूप है अल्प मे सुख नहीं, भूमा को ही सच्चिदानंद परमात्मा या तत्त्व कहते हैं, अद्वितीय ज्ञान को ही तत्त्व कहते हैं	भाग २
3	OCT 03.mp3	44	⊕	⊕	⊕	सामवेद : छा०उ० : छटा अ०:: **आरुणि-श्वेतकेतु सम्वाद ::** एक कारण के ज्ञान से सभी कार्य जाने जाते हैं क्यों कि कारण कार्य में व्याप्त होता है, कार्य कल्पित होने से मिथ्या होते हैं कारण ही सत्य होता है, दृ० :: माटी-घट मठ, सुवर्ण-आभूषण, जल-लहर	विशेष
4	OCT 04.mp3	36	⊕			सीताजी द्वारा **राम का निनि० सच्चि०स्वरूप** एवं अपना **मूलप्रकृति स्वरूप निरूपण**, राम माया से परे है कर्म मुझ प्रकृति में ही हैं	
5	OCT 05.mp3	34	⊕	⊕		**तैत्रीय उ०::** परमब्रह्म परमात्मा या हमारी आत्मा से आकाश का प्रादुर्भाव हुआ, आकाश से-वायु से-अग्नि से-जल से- पृथ्वी से-औषधियाँ/वृक्ष से-अन्न से-स्त्री/पुरुष उत्पन्न हुए,आदि-अंत में अजर-अमर आत्मा ही रहता है,मध्य में जगत उत्पन्न-लय होता है	
6	OCT 06.mp3	35	⊕	⊕		**भ०राम की नर लीला ::** पंचवटी में शूर्पणखा प्रसंग, खर-दूषण वध, रावण का राम से हठ पूर्वक बैर, सीता हरण, जटायु उद्धार	a
7	OCT 07.mp3	51	⊕			भगवान के ज्ञान के साधन **४ कृपाओं का संयोग** है :: १ ईश्वर कृपा २ वेद कृपा ३ गुरु कृपा ४ आत्म कृपा	
8	OCT 08.mp3	34	⊕	⊕		**भ०राम की नर लीला ::** अयोध्या में अवतरण कथा, विश्वामित्र यज्ञ रक्षा, आदिशक्ति सीता से विवाह, **कैकेयी से वनवास की प्रार्थना**	b
9	OCT 09.mp3	44	⊕	⊕		गीता अ०१३/१-२ : **क्षेत्र क्षेत्रज्ञ दो ही पदार्थ हैं**, सभी शरीर **क्षेत्र** हैं, उनमें बैठकर देखने वाला **क्षेत्रज्ञ** कहलाता है, वह क्षेत्रज्ञ एक अकेला मैं ही हूँ, सभी क्षेत्र मेरी माया कृत हैं, क्षेत्र क्षेत्रज्ञ का ज्ञान ही **संपूर्ण ज्ञान** है	१
10	OCT 10.mp3	00	⊕	⊕	⊕	प्रवचन अनुपलब्ध	NA
11	OCT 11.mp3	36	⊕	⊕		गीता अ०१३/१-२ : **क्षेत्र क्षेत्रज्ञ दो ही पदार्थ हैं**, सभी शरीर **क्षेत्र** हैं, उनमें बैठकर देखने वाला **क्षेत्रज्ञ** है, वह एक मैं ही हूँ, सभी मायाकृत क्षेत्रों मे **३शरीर** -'स्थू० सू० का०', **३अवस्थाऐं** -'जा०स्व०सु०' एवं **५कोष हैं**, कर्म के ५हेतु हैं, **सब कर्म सूक्ष्म देह में हैं**	२
12	OCT 12.mp3	29	⊕			**भ० राम की नर लीला ::** सीता हरण, जटायु उद्धार, 'मोह ममता'-मनुष्यों का चरित्र दर्शाने हेतु सीता विरह में विलाप	
13	OCT 13.mp3	41	⊕	⊕		सृष्टि के आदि में एक सच्चि०भगवान ही थे जिनसे छायावत् माया उत्पन्न हुई जो स्वयं जगत में परिणित हो गई, दृश्य शरीर सीता व द्रष्टा चेतन तत्त्व राम का स्वरूप हैं, **ये जगत सीताराम का ही स्वरूप है,** अंत में छाया पुरुष में समाकर पुरुषरूप हो जाती है	
14	OCT 14.mp3	39	⊕			ईश्वर जीव का स्वरुप नि०, **तीन लक्षणा** :: १जहत २अजहत ३सरी **भाग-त्याग** लक्षणा द्वारा ईश्वर-जीव एकत्व सिद्धि-**'तत्वमसि'**	
15	OCT 15.mp3	30	⊕			**भ०राम की नर लीला ::** शबरी को भगवान द्वारा नवधा भक्ति का उपदेश, **भक्तों के ४ प्रकार**, **आर्त** भक्त द्रौपदी-चीरहरण कथा	c
16	OCT 16.mp3	42	⊕	⊕		सृष्टि के आदि में सच्चि०पुरुष से छायारूप असत जड़ दु:खरूप महामाया की उत्पत्ति+ कल्पित ईश्वर-जीव का स्वरूप निरूपण, ईक्षण से प्रवेश पर्यन्त-**ईश्वरसृष्टि**, जा०स्व०सु०मुक्त बन्ध पिता पुत्र राजा प्रजा-**जीवसृष्टि**, जीव की व्यष्टि निद्रा से अद्भुत स्वप्न एवं ईश्वर की समष्टि निद्रा अथवा माया से जागृत जगत की उत्पत्ति होती है	
17	OCT 17.mp3	34	⊕			**भ०राम की नर लीला ::** शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश, अपना निनि०-ससा० स्वरूप निरू०, आत्मा सत्य व जगत मिथ्या है	d
18	OCT 18.mp3	58	⊕	⊕	⊕	**विद्याभास की ७ अवस्थाऐं** :: १ अज्ञान २ आवरण ३ विक्षेप ४ परोक्षज्ञान ५ अपरोक्षज्ञान ६ दु:ख निवृत्ति ७ परमानंद की प्राप्ति	
19	OCT 19.mp3	30	⊕			**भ० राम की नर लीला ::** शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश, प्रथम भक्ति **'संतसंग'** महिमा, भक्तों के ४ प्रकार व आर्त भक्त दृ०	e
20	OCT 20.mp3	47	⊕	⊕		**छः अनादि** :: १ ब्रह्म २ माया ३ इनका सम्बंध ४ ईश्वर ५ जीव ६ इन दोनों का भेद । ब्रह्म अनादि अनंत, शेष अनादि सांत	
21	OCT 21.mp3	31	⊕			**भ०राम की नर लीला** :: नवधा भक्ति उपदेश, **भक्तों के ४ प्रकार**-आर्त, अर्थार्थी, जिज्ञासु, ज्ञानी। **आर्त** कबूतर-कबूतरी की कथा	f
22	OCT 22.mp3	45	⊕	⊕	⊕	**ब्रह्म** का स्वरूप **'सत् चित् आनंद' ::** ५ अंश हैं :: **'अस्ति भाति प्रिय'** व्यापक ब्रह्म के व **'नाम रूप'** संसार माया के पर्याय हैं	
23	OCT 23.mp3	32	⊕			**भ०राम की नर लीला** :: नवधा भक्ति निरूपण, **भक्तों के ४ प्रकार** ::- ब्रह्मम् तत्त्व **जिज्ञासु**, ब्रह्मम् का सच्चिदानंद स्वरूप निरूपण	
24	OCT 24.mp3	52	⊕	⊕		**ब्रह्मोपनिषद** :: **सृष्टि** :: ब्रह्म-अव्यक्त शक्ति/माया-महत्तत्त्व-अहंतत्त्व-पंचतन्मात्राऐं-पंचभूत-पंचीकरण-अखिलं जगत+गर्भउपनिषद	
25	OCT 25.mp3	29	⊕			**भक्तों के ४ प्रकार -** आर्त, अर्थार्थी, **जिज्ञासु**-सच्चिदानंद ब्रह्म, तत्त्वमसि, **ज्ञानी**-सत्य ज्ञान आनंद से पूर्ण-जिसे कुछ पाना शेष नहीं	
26	OCT 26.mp3	42	⊕	⊕		अद्वितीय ब्रह्म से सर्वप्रथम **ओंकार** उत्पन्न हुआ, ओंकार भगवान का **सर्वश्रेष्ठ नाम** है, **ओंकार का विस्तार ::** स्वर व्यंजन से नामरूप अखिलं जगत । ३ गुण, ३ अवस्थाऐं, ३ शरीर आदि सभी त्रिपुटी प्रणव/प्रकृति/ओंकार का स्वरूप है जो स्वयं तो अज्ञान रूप है किन्तु ब्रह्म को **'तत्'** पद से बतलाता है यानि **'इदं'** मुझप्रणव/ओंकार को जो जानता है **'तत'** यानि वह ब्रह्म है	
27	OCT 27.mp3	57	⊕	अथर्ववेद माण्डूक्य उपनिषद		कृष्णयजुर्वेद मुक्तिकोपनिषद :: भग० राम-हनुमान सम्वाद :: सभी उपनिषद या ज्ञानकाण्ड वेदों के सिरोभाग हैं जो अन्तिमकाण्ड अथवा वेदान्त भी कहलाते हैं **वेदके ६अंग**-१शिक्षा २कल्प ३व्याकरण ४निरुक्त ५छंद ६ज्योतिष तथा **३कांड**-१कर्म २उपासना ३ज्ञान हैं ।भगवान राम द्वारा **अथर्ववेद के माण्डूक्य उपनिषद** के प्रथम **३ चरणों** का सविस्तार निरूपण ।	भाग १
28	OCT 28.mp3	36	⊕	अथर्ववेद माण्डूक्य उपनिषद		**अथर्ववेद :: माण्डूक्य उपनिषद ::** प्रथम ३ चरणों के निषेध के उपरान्तशेष रहने वाला ही **चौथा चरण** है जिसका स्वरूप विश्व-तैजस-प्राज्ञ स्थूल शरीर एवं इ० मन बुद्धि प्राण तथा जा०-स्व०-सु० प्रपंच से पृथक एवं विलक्षण है, वह शान्त अदृष्ट्य अव्यवहार्य अचिन्त्य परम कल्याणकारी एक अद्वितीय ब्रह्म हमारी आत्मा है, **माण्डू० उप०** के **४थे चरणों** का सविस्तार निरूपण ।	भाग २
29	OCT 29.mp3	54	⊕	माण्डू० एवं रामोत्तर तापनी उ०		कृष्णयजुर्वेद मुक्तिकोपनिषद :: भग० राम-हनुमान सम्वाद :: हे हनुमान मेरा वास्तविक स्वरूप सबसे छोटे मा०उ० में बताया गया है जो कैवल्यपद प्राप्ति के लिये पर्याप्त है, इसमें ब्रह्म और आत्मा का एकत्व आरम्भ में ही बताया गया है जिसके ४ चरण हैं :: मा०उ० का संक्षेप में वर्णन, **रामोत्तर तापनी उ०**:: इसमें **तुरीय** को **राम** तथा **विश्व-तैजस-प्राज्ञ** को **लखन-शत्रुघ्न-भरत** बताया है	भाग ३
30	OCT 30.mp3	50	⊕	⊕	⊕	सृष्टि के आदि में सबसे पहले भ० नारायण ने ब्रह्मा को उत्पन्न किया व उन्हे शोक मोह से ग्रस्त देख कर उन्हें मुक्त करने के लिये वेदांत के सिद्धान्त **'ज्ञान'** का उपदेश दिया :: **'गुरु परम्परा'** का वर्णन :: हम तो ज्ञान स्वरूप ही हैं,यह अज्ञानरूपजगत घोर अज्ञान-अंधकार रूपकारण निद्रा/मायाका ही कार्य है अतः **दृश्य माया है व द्रष्टा ब्रह्म/आत्मा है** वही हमारा स्वरूप हैं	अति विशेष
31	OCT 31.mp3	58	⊕	⊕		अ०रा०-प्र०स०-राम हृदय :: हनुमान जी भ०राम के भक्त हैं अतः सीताजी द्वारा भ० राम के **निनि० स्वरूप का निरूपण**-क्यों कि **भक्ति** ही **'ज्ञान और वैराग्य'** की साधन हैं जिसके फलस्वरूप ही भग० के निनि० स्वरूप का ज्ञान होता है - 'रामं विद्धि परंब्रह्म'	१
32	OCT 32.mp3	38	⊕	⊕		भ०राम-हनुमान सम्वाद:: सीताजी द्वारा भ०राम के **निनि०स्वरूप का निरूपण**:: 'रामं विद्धि परंब्रह्म सच्चिदानंद अद्वयं' निरूपण	२
33	OCT 33.mp3	51	⊕	⊕		अ०रा०-प्र०स०-राम हृदय :: हनुमानजी का भ०राम से जीव मात्र के कल्याण हेतु अपने निनि० स्वरूप बतलाने की प्रार्थना अतः सीताजी द्वारा निनि०निरूपण :: **'रामं विद्धि परंब्रह्म सच्चिदानंद अद्वयं'** तथा **अपना स्वरूपनिरूपण** :: **'मामूविद्धि मूल प्रकृतिम्'**	३
34	OCT 34.mp3	65	⊕	⊕		सीताजी द्वारा भ०राम का निनि०निरू० :: **'रामं विद्धि परंब्रह्म',** सभी **जीव** राम के अंश हैं अत:**सच्चिदानंद**स्वरूप ही हैं किन्तु उनके शरीरों की उत्पत्ति-पालन-संहार मैं ही करती हूँ, मैं महामाया जड़ मूल प्रकृति राम की दृष्टि-प्रेरणा मात्र से जगत रूप में परिणित हो जाती हूँ, सारे कर्म मुझ प्रकृति में हैं राम सर्वथा अकर्म हैं, **सीताजी का महाकाली रूप व सहस्रमुख रावण ही कथा**	४

35	OCT 35.mp3	43				**सीताजी द्वारा भ० राम का निनि० निरू०** :: **'रामं विद्धि परंब्रह्म '**, सभी शरीरों में जीव रूप से राम ही बैठे हैं और देख रहे हैं ये ही उनका निनि० स्वरूप है, मुझ सीता को ही सब शरीरों या जगत की उत्पत्ति-पालन-संहार करने वाली मूल प्रकृति जानो। **स्वयं भ० राम द्वारा 'आत्मा परमात्मा और अनात्मा' का स्वरूप निरूपण** तथा हनुमानजी को **अवांतर एवं महावाक्य द्वारा ज्ञानोपदेश**	५
36	OCT 36.mp3	30				भ०राम का अवतार मुख्यरूप से मनुष्यों को शिक्षा हेतु ही हुआ जिसमें उन्होंने वेद के उपदेशानुसार कर्तव्य कर्म करके दिखलाये	
37	OCT 37.mp3	45				सृष्टि के आदि में भगवाद ने सर्वप्रथम ब्रह्मा को उत्पन्न किया व उन्हें शोक-मोह से ग्रस्त देखा तो विष्णु रूप में प्रकट होकर ज्ञान का उपदेश किया और उन्हें ब्रह्म ज्ञान हुआ तथा वह शोक-मोह से मुक्त हो गये। ब्रह्म ज्ञान ::: हे ब्रह्मन् सृष्टि के आदि - अंत में एक अकेला मैं ही हूँ मध्य में दीखने वाली जा०-स्व०-सु० मेरी जड़ माया है जो मुझ देखने वाले को ढाँके रहती है	
38	OCT 38.mp3	31				भ०विष्णु ने भ०राम रूप में अवतार मुख्यरूप से मनुष्यों को शिक्षा हेतु लिया, पंचवटी में शूर्पनखा प्रसंग, एक पत्निव्रत की श्रेष्ठता	
39	OCT 39.mp3	34				**ब्रह्मोपनिषद में सृष्टिक्रम** :: ब्रह्म से सर्वप्रथम छाया के समान अव्यक्त/अविद्या नाम की शक्ति उत्पन्न हुई फिर उससे महत् तत्त्व से अहं तत्त्व से पंचतन्मात्रा से पंचमहाभूत से अखिलं जगत,**जीव के ४ दोष** ::**भ्रम प्रमाद विप्रलिप्सा - ठगने की इच्छा करणापाटो - करण अथवा ज्ञान के साधन की अयोग्यता,** ये **४रों दोष ईश्वर में नहीं हैं इसलिये वह सर्वज्ञ है**	
		00				प्रवचन अनुप्लब्ध	NA